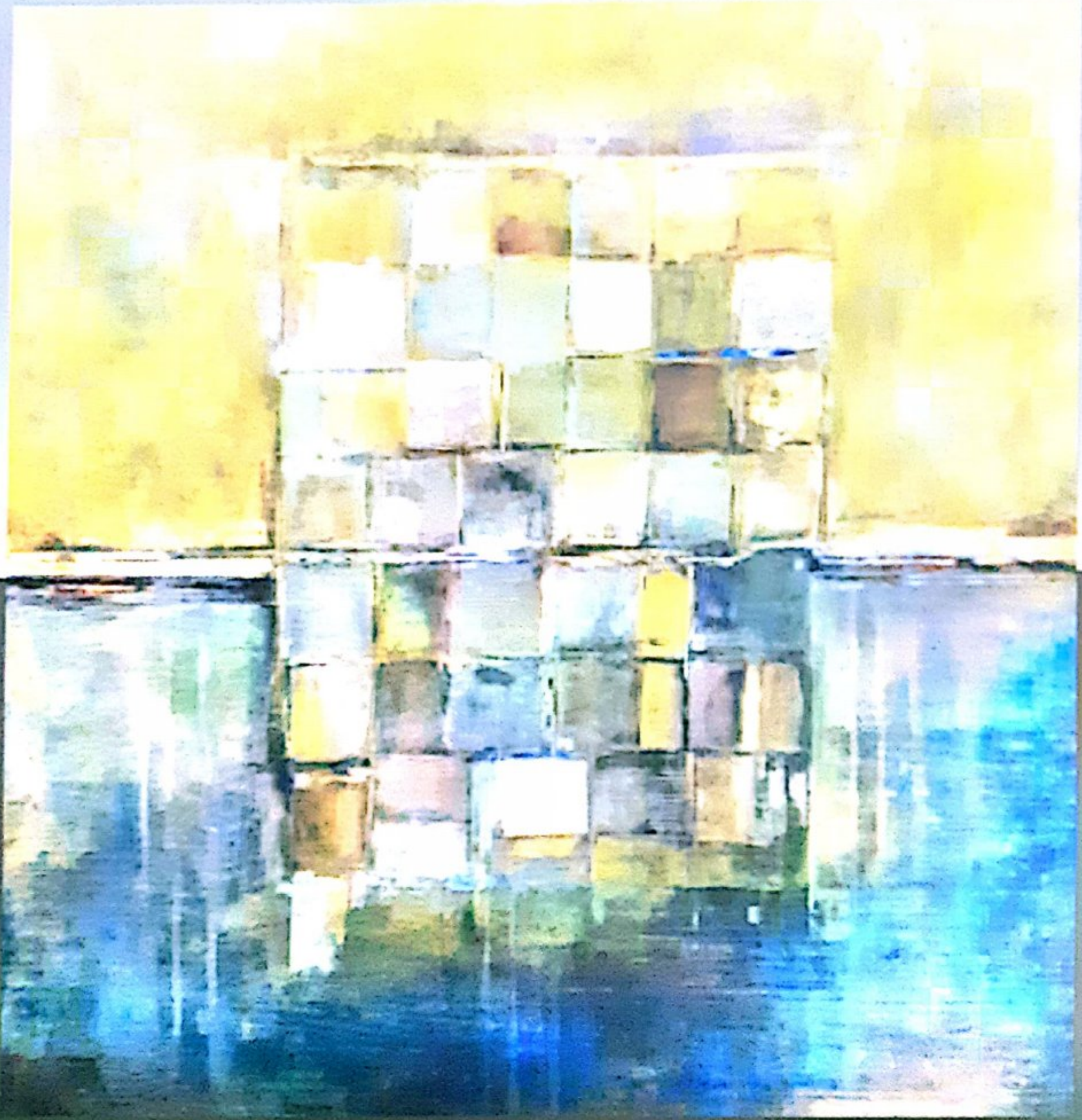


भाग
1

भारतीय भाषा साहित्य

(विविध संदर्भ)



संपादक
डॉ. राजेन्द्र यादव

भारतीय : भाषा साहित्य

(विविध संदर्भ)

भाग-1

संपादक
डॉ. राजेन्द्र यादव

विजया बुक्स

ISBN : 978-93-81480-98-4

प्रकाशक : विजया बुक्स
1/10753 सुभाष पार्क, गली नं. 3
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 011-22822514; 9910189445
Email : vijyabooks@gmail.com
rajeev02sharma@gmail.com

© : लेखक

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : 650/-

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

विषय सूची

संपादकीय	5
1. स्त्री संदर्भ और भक्ति कालीन हिन्दी कविता प्रो. चन्दा बैन	11
2. भारतीय साहित्य की भूमिका डॉ. राजेन्द्र यादव	24
3. कफन कहानी को अंग्रेजी हिंदी पाठ : एक तुलनात्मक अध्ययन डॉ. विवेकानंद उपाध्याय	32
4. उत्तर राम प्रसंग : एक तुलनात्मक अध्ययन डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र	40
5. पराजित होते सम्बन्ध और हिन्दी उपन्यास डॉ. हिमांशु कुमार	54
6. समकालीन आदिवासी कविता डॉ. मनीष कुमार	59
7. दलित साहित्य में अस्मिता की अवधारणा डॉ. अरविन्द कुमार	71
8. शिक्षा में मूल्यांकन की अवधारणा डॉ. अरविन्द कुमार गौतम	82
9. छायावाद और जयशंकर प्रसाद का काव्य इन्द्रसिंह वरकड़े	95
10. हमारे समय में कबीर की प्रासंगिकता राजकुमार अहिरवार	102

11. संस्कृत-साहित्य में प्रजातान्त्रिक मूल्य डॉ. दिव्या देशपाण्डे	110
12. भीरा काव्य और नारी सशक्तिकरण लक्ष्मेश्वरी बी.आर. कुर्रे	118
13. सर्वहारा के प्रति हिन्दी कविता का दायित्व अमर आनंद आलदे	124
14. प्रियंचद के कथा साहित्य में सामाजिक जीवन का चित्रण रामेश्वर धुर्वे	129
15. 'साये में धूप' और 'एल्गार' में व्यक्त प्रवृत्तियों की समतुल्यता प्रो. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	142
16. 'लोक साहित्य और परंपरा' चरणदास वर्मन	148
17. निमाड़ी भाषा और अन्तर्लोक कथाएँ डॉ. संतरा चौहान	157
18. स्त्री-अस्मिता और आधुनिक हिन्दी कविता डॉ. किशोर सिंह सोलंकी	164
19. लोक साहित्य में लोकगीतों की भूमिका डॉ. सुनीता कुजूर	171
20. भावगीत सादरीकरणाची कौशल्ये महेश शामराव दाडगे	180
21. दलित साहित्य : अस्मिता का संघर्ष डॉ. विक्रम सिंह चौहान	185
22. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविताओं में वैश्वीकरण की चुनौतियाँ प्रो. कांबले बालिका रामराव	194
23. प्रेमचंद की कहानियों में धन-धान्य एवं कृषक जीवन का चित्रण डॉ. राजेश्वरी मरकाम	199

स्त्री संदर्भ और भक्ति कालीन हिन्दी कविता

प्रो. चन्दा बैन

आज जब हम भारतीय सामाजिक मूल्यों की चर्चा और उन मूल्यों की अनिवार्यता महसूस कर रहे हैं, तब हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की भूमिका निर्विवाद रूप से इन मूल्यों के पोषण में सहायक सिद्ध होती है। जब भक्तिकाल हमारे हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहलाता है, तब उस युग की विस्तार प्रक्रिया की श्रेष्ठता के कारण ही हम आज उस युग के साहित्य पर पुनर्मूल्यांकन कर रहे हैं। इस युग के समग्र साहित्य पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि मनुष्य जीवन के समग्र आयाम यथा राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, समान्य जन के जीवन, प्रकृति आदि सभी का वृहद् वर्णन इस साहित्य में देखा जा सकता है। भक्त कवियों की स्त्री संबंधी धारणा देखने से पूर्व हम भक्ति आंदोलन की निर्मिति पर चर्चा करते हैं। “हिन्दी साहित्य के संदर्भ में भक्तिकाल से तात्पर्य उस काल से है जिसमें मुख्यतः भागवत धर्म के प्रचार-प्रसार के परिणाम स्वरूप भक्ति आंदोलन का सूत्रपात हुआ और उसकी लोकोन्मुख प्रवृत्ति के कारण धीरे-धीरे लोक प्रचलित भाषाएँ भक्ति भावना की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती गईं और कालांतर में भक्ति विषयक विफल साहित्य की बाढ़ सी आ गई।”¹ भक्ति की यह भावना केवल किसी एक धर्म या सम्प्रदाय तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें वैष्णव, शैव, शाक्त के अतिरिक्त जैन, सिद्ध, नाथ, निर्गुण, सूफी सभी सम्प्रदाय एक साथ धर्म साधना में प्रवृत्त दिखाई देते हैं।